गा लो गुरु गुणगान

कृति

गा लो गुरु गुणगान

रचयिता :– आचार्य श्री विनम्रसागर

संकलन

श्रमणी आर्यिका विमलश्री

श्रमणी आर्यिका विनेहश्री

प्राप्ति स्थान -

श्री देवेन्द्र कुमार जैन
बड़ी बजरिया, बीना (07580-223344)

श्री विराग विद्यापीठ,
भिण्ड (म.प्र.)

सीपुर समता तीर्थ
सीपुर (9828613614)

प्रथमावृत्ति –
1000 केकड़ी 2004

द्वितीयावृत्ति –
2200 अजमेर 2007

तृतीयावृत्ति –
2000 फिरोजाबाद 2016

चतुर्थावृत्ति –
2000 फिरोजाबाद 2016

कम्प्यूटर डिजाइन एवं मुद्रक :– ***मुकेश जैन 9414555103***

आर्यन् एजेन्सीज्

इन्दिरा बाजार, अजमेरी गेट, जयपुर (राज.)

(सर्वाधिकार सुरक्षित)

ज्ञानदान राशि – 10/–रु.मात्र

दो शब्द

गुरु द्वार है परमात्मा का, परमात्मा को पाने के लिए गुरु ही मार्ग दर्शक हैं और जब तक हृदय से श्रद्धा भक्ति गुरुचरणों में समर्पण नहीं होगा तब तक परमात्मा को नहीं पाया जा सकता क्योंकि गुरु वह होता है जो अन्धकार से प्रकाश की ओर ले जाए, अनन्त संसार का अन्त करा दे, बिन्दु को सिन्धु बना दे, पत्थर को परमात्मा बना दे। गुरु की भक्ति के लिए गुणगान करने के लिए कोई भी समर्थ नहीं है कबीर ने लिखा है–

सब धरती कागज करूँ, लेखनी सब वन राय
सात समन्दर स्याही करूँ, गुरु गुण लिखा न जाय ।

वैसे ही शब्दों से खेलने वाले चिन्तन के धनी **कविहृदय आचार्य विन्रमसागर जी** जिनके रोम–रोम में गुरु के प्रति अक्षय भक्ति भरी पड़ी है और उस श्रद्धा को अपने शब्दों के माध्यम से अपनी लेखनी के द्वारा हम सभी के समक्ष पूजन के रुप मे परोसा है कि हम सब भी गुरु की भक्ति गंगा का रसास्वादन करके गुरु के प्रति विन्रम हों श्रद्धा भक्ति से समर्पित होकर अपने संसार का अन्त कर सकें । तो प्रस्तुत है आचार्य श्री द्वारा रचित पूजन का संग्रह

“गा लो गुरु गुणगान”

आर्यिका विमलश्री

मंगलाचरण

विद्यावारिधि वीतराग-ममलं, सम्यकत्व सम्पत्प्रदं,
सम्यक्बोध विकाशका सुजनका:, रत्नत्रयाराधकः ।
श्री सिद्धान्त सुतत्त्व तर्क निपुणं, सत्यं शिवं सुंदरं,
तं प्रणमामि विरागसूरि सततं, चारित्र मम् दायकम् ।। 1 ।।

सम्यग्दर्शन - ज्ञान-वीर्य-चरितं, तपसि प्रयत्नाद्यते,
पंचाचार प्रपालनं गुणयुतं, निर्ग्रन्थ निस्पृह पराः ।
बाह्यभ्यंतर सर्वमोह रहिताः, जिनदेव पूजित पदं,
तं प्रणमामि विरागसूरि सततं, रत्नत्रयं दायकं ।। 2 ।।

निस्संगं निखिलागमं सुजनिताः रत्नत्रयाभूषणं,
द्वादश तप धरितं स्वभाव लखितं, त्यागस्य मूरत परं ।
स्वत्माधीन स्वशक्तिरूप गमनं, जिनशासनो दीपकं,
तं प्रणमामि विरागसूरि सततं, रत्नत्रयं दायकं ।। 3 ।।

निर्विकल्प ज्ञानोपयोग विमलं, परभाव निर्मुक्तयः,
वीर्याचार स्वशक्तिरुपं परमं, गणनायकं त्वं परं ।
यः वात्सल्यदिवाकरः मुनिवरा, दशधर्मयुक्तं परं,
तं प्रणमामि विरागसूरि सततं, रत्नत्रयं दायकं ।।4 ।।

अपने रंग में रंग दो

तर्ज – जिया कब तक उलझेगा ....

हे गुरु विरागसागर ! दृग-बोधि हमें वर दो
मेरी इस काया को अपने रंग में रंग दो-
हे गुरु विरागसागर..............

जीवन की साँसों पर, आवाज तुम्हारी है।
गुलशन की धड़कन में, खुश्बू तेरी प्यारी है
मुरझाए गुल में तुम, गुण की खुश्बू भर दो
हे गुरु विरागसागर..............

अपने मन मंदिर में, इक जगह बनाई है
उसमें तेरी गुरुवर, तश्वीर लगाई है
आशीष रहे मुझ पर, इजहार यही कर दो
हे गुरु विरागसागर..............

हमने सारा जीवन, कर डाला है अर्पण
तेरी छाया में अब, गुजरे सारा जीवन
देकर आशीष हमें मेरी ओर नजर कर दो
हे गुरु विरागसागर..............

हर कदम पे काँटे हैं, दुनियाँ विष ज्वाला है
तू रक्षक है मुझको अमृत का प्याला है
चैतन्य किरण देकर मुझको मुझमें भर दो
हे गुरु विरागसागर..............

द्वय चरणों को छूकर जो शरणा पाते हैं
वो सेवा कर तेरी भव से तिर जाते हैं
मुझे मरण समाधि दे तुम अजर-अमर कर दो
हे गुरु विरागसागर..............

उपकार नहीं भूले

तर्ज – हम भूल गये रे ....

शिष्य भूल जाए रे घर द्वार मगर गुरु द्वार नहीं भूले
गुरु जीवन के आधार-ऽऽऽ मगर उपकार नहीं भूले
गुरु..............

जब शिष्य नहीं चल पाता है-तब गुरु ही उसे चलाते हैं-2
वह ठोकर खा गिर जाता है-ऽऽ तब गुरु ही उसे उठाते हैं
भव से गुरु करते पार-ऽऽऽ नहीं यह शिष्य कभी भूले
गुरु..............

गुरु के बिन जीवन शुरु नहीं, गुरु ही शुभ फूल खिलाते हैं।
गुरु ब्रह्मा है गुरु विष्णु हैं, गुरु ही महेश कहलाते हैं
गुरु देते जीवन सार-ऽऽ यही वो बात नहीं भूले
गुरु..............

गुरु दृष्टि दिव्य प्रदाता हैं, गुरु ही सम्यक्त्व विधाता हैं
गुरु मात पिता हैं भ्राता हैं, गुरु मुक्ति मार्ग प्रदाता हैं
गुरु हैं जीवन के द्वार-ऽऽऽ नहीं शिष्य राह कभी भूले
गुरु..............

गुरु ही सतधर्म बताते हैं गुरु किस्मत नई बनाते हैं
गुरुदेव जगत के सूरज हैं जो अंतर ज्योति जलाते हैं
गुरु ज्योति पुंज किरदार-ऽऽऽ नहीं यह बात कभी भूले
गुरु..............

गुरु के द्वय चरण हृदय में हों मम हृदय रहे गुरु चरणों में-3
दो मरण समाधि हे गुरुवर! मैं हूँ अर्पण द्वय चरणों में
कर दो मेरा उद्धार-ऽऽऽ नहीं उपकार कभी भूले
गुरु..............

भजन

तर्ज – दूल्हे का चेहरा ....

हे गुरुवर मेरा जीवन कर दो सावन-2
वंदन लाखों बार, करो मन को पावन .. हो .. ..
दोनों हाथों से वर दो आशीष हमें
संयम की ले नाव तरूँ मैं भव-कानन-ऽऽऽ
हे गुरुवर ....

आपसे मेरा मिटे अज्ञान हे गुरुवर !
आपसे हमको मिले सत् ज्ञान हे गुरुवर !
आपने हमको दिया गुणगान हे गुरुवर !
आपकी हम बन गये पहिचान हे गुरुवर !
गुरु मिलते ही मिल जाता है अपनापन-2 वंदन ....!
हे गुरुवर ....

आप ही भू पर दिखे हो देवता गुरुवर !
आपके चरणों को हरदम पूजता गुरुवर !
आपसे मिलता है हमको ज्ञान हे गुरुवर !
आपका हम नित करें बहुमान हे गुरुवर !
गुरुवर की मुद्रा में दिखता है भगवन्-2 वंदन ....!
हे गुरुवर ....

आप ही सच्चे धरम की शान हो गुरुवर !
आप ही मेरे लिए भगवान् हो गुरुवर !
आपसे मेरा यहाँ कल्याण हो गुरुवर !
आपसे हमको यहाँ निर्वाण हो गुरुवर !
गुरु बिन कभी न मिलता जग में ज्ञान सघन-2 वंदन !
हे गुरुवर ....

हे गुरु ! दोनों चरण उर में रखूँ हरदम,
आपके चरणों में निकले ध्यान करते दम,
दो हमें आशीष ऐसा दूर हो व्याधि,
आपसे पाकर समधि नाश दूँ आधि,
तेरे चरणों की रज को करता वंदन2 वंदन ....

भगवान मिल गये

गुरुवर क्या मिल गये हमें भगवान् मिल गये
उजड़े हुए गुलशन को बागवान मिल गये

तुम ही हो मेरे रास्ता अंतिम मुकाम के
तुम दे रहे हो सबको लक्ष्य मोक्षधाम के
गुरु के चरण क्या मिल गये गुणगान मिल गये
उजड़े हुए............

सब राग द्वेष तज के जो विराग हो गये
नापाक छोड़ करके जो पाक हो गये
गुरु बोल मिल गये क्या-ऽऽ शिवराम मिल गये
उजड़े हुए............

हर राह पे गुरु ने हमें मंजिल दिखाई है
गुरु की नजर से हमने सत्य ज्योति पाई है
ज्योति क्या मिल गई हमें हम खुद ही जल गये
उजड़े हुए............

गुरु के चरण में रहके हम शिवराह पायेंगे
उनको रखेंगे उर में और गुणधाम जायेंगे
गुरुवर से हम मिले क्या हम खुद से मिल गये
उजड़े हुए............

चरण शरण में

तर्ज - नजर के सामने ....

गुरु चरण में, गुरु शरण में
कौन रहता है - ऽऽ वो हैं हम - ऽऽऽ

श्रद्धा क्या होती है - ये गुरु चरणों में जानो
प्राणों से भी प्यारे तुम गुरुवर को ही मानो
सर्व अर्पण सदा - कर विनम्र नमन् - ऽऽऽ
गुरु चरण में...........

संयम-समता-सौरभ लहराती है चेहरे पर
ज्ञान-सरलता-सुन्दर-लहराती जिनके अन्दर
जिनकी मूरत में है - वीतरागी नमन् - ऽऽऽ
गुरु चरण में...........

गुरु आशीष मिले जब तो सब कुछ मिल जाता है
चरणों को पाकर उर कमलों सा खिल जाता है
अब तो रहना हमें गुरु चरण में मगन - ऽऽऽ
गुरु चरण में...........

फूलों जैसी वाणी जो लगती है मनुहारी
खुश्बू बिखराती है - है जग में सबसे न्यारी
ज्ञान वर दो हमें - बोधि की दो किरण - ऽऽऽ
गुरु चरण में...........

उर में द्वय चरणों को, रखना है गुरुवर के अब
अंत समय जीवन का क्या मालूम आ जाए कब?
गुरु ''विनम्र'' नमूँ - हो समाधि मरण - ऽऽऽ
गुरु चरण में...........

।।भजन।।

हे गुरु! ज्ञान का दान दो - हम सभी की यही कामना है
दूर अज्ञान तम को करो - हो विनम्र यही भावना है

एक दीपक मेरे दिल जले - फूल खुश्बू भरा उर खिले
तेरी आराधना मैं करूँ - ऐसा संगम हमेशा मिले
मेरे जीवन में संयम पले - ऐसी हरदम मेरी याचना है
हे गुरु ....

रोशनी ज्ञान की उर खिले, तेरा ही दीप उज्ज्वल बनूँ
नाम तेरा हि जपता रहूँ, तेरा मैं ध्यान हरदम करूँ
तेरी तश्वीर दिल में रहे, करना तुझसी हमें साधना है
हे गुरु ....

तू न मिल पाया हमको यहाँ, सारी दुनियाँ मिले भी तो क्या?
दिल नहीं खिल सका गर यहाँ, फूल सारे खिलें भी तो क्या?
तेरा दीदार होता रहे, मेरी चरणों यही वंदना है,
हे गुरु ....

तेरा यशगान गाऊँगा मैं, तेरा श्रद्धान लाऊँगा मैं
अब न भूलूगाँ तुमको कभी, तुझको दिल में समाऊँगा मैं
हो समाधि मेरी अंत में, मेरी हरपल यही प्रार्थना है
हे गुरु ....

Acharya Vinamra Sagar

।।भजन।।

नमस्ते नमस्ते नमस्ते नमस्ते ।
गुरुदेव तुमको नमस्ते नमस्ते ।।

तुमने गगन को गुणों से गुंजाया
महावीर भगवान जैसी है छाया
हमको बचाया उजड़ते-उजड़ते
गुरुदेव तुमको ....

सागर से गहरा तुम्हारा हृदय है
सर्दी व गर्मी का तुमको न भय है
हमको बनाने हैं अब तुमसे रिश्ते
गुरुदेव तुमको ....

अमृत सी वाणी सबको पिलाते
गंगा धरम की दिलों में बहाते
तुम हो धरम के मसीहा चमकते
गुरुदेव तुमको ....

हिमालय से ऊँची है महिमा तुम्हारी
अध्यात्म सिद्धांत तुम ज्ञानधारी
तुम ज्ञान सूरज जगत में चमकते
गुरुदेव तुमको ....

मरना सिखाया - जीना सिखाया
संसार सागर से हमको उठाया
मुझको बना दो कोई से फरिश्ते
गुरुदेव तुमको ....

Acharya Vinamra Sagar

।।भजन।।

गुरुवर ऐसा दो अब ज्ञान - हम सब बन जाएँ इंसान
मुख पे हरदम रहे मुस्कान
गुरुवर ऐसा दो ....

तेरे गायें हम सब गीत, तुझसे करते हैं हम प्रीत
तू है हम बच्चों का मीत, भर दो जीवन में संगीत
मेरे गुरुवर तुम्हीं हो भगवान
गुरुवर ऐसा दो ....

साहस दिल में रक्खें हम, आँखें कभी करें न नम
देखें अगर किसी का गम, तो हो जाए हमको गम
ऐसी शक्ति हमें दो महान
गुरुवर ऐसा दो ....

दुनियाँ गाये तेरा नाम, गाकर पाये वह शिवधाम
तुम हो ब्रह्मा-विष्णु राम, करना हम सबका कल्याण
तुमको लाखों 'विनम्र' प्रणाम
गुरुवर ऐसा दो ....

||श्री विरागसागराय नमः||

जैनाचार्य 108 श्री विरागसागर जी महाराज की पूजन

रचयिता – आचार्य विनम्रसागर

स्थापना

हे गुरु विराग सागर! संत – तुम्हीं हो कलियुग के भगवंत
तुम्हारी महिमा न्यारी है
अष्ट दरब से पूजन करता जो सुखकारी है
चरण में वंदन है चरण रज चंदन है

ॐ ह्रूं प. पू. आचार्य श्री विराग सागर यतिवर! अत्र अवतर संवौषट् आह्वानम्
ॐ ह्रूं प. पू. आचार्य श्री विराग सागर यतिवर ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्
ॐ ह्रूं प. पू. आचार्य श्री विराग सागर यतिवर ! अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधीकरणम्

(पुष्पांजलिं क्षिपामि)

जल

पावन क्षीरोदधि का जल ले भक्तिभाव उर लाया,
निर्मल मन है दर्पण जैसा कंचन जैसी काया।
विमल सलिल सा मन हो निर्मल मेरा भी हे गुरुवर !
चरणों की दे शरण हमें फिर ज्ञान वरो हे गुरुवर।।
करूँ चरणों में जल की धार – हमें दो मन में शुद्ध विचार
प्रार्थना यही हमारी है – अष्ट दरब....................

ॐ ह्रूं प. पू. आचार्य 108 श्री विरागसागर यतिवरेभ्यो जन्म-जरा-मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा

चन्दन

भवाताप से दूर हे गुरुवर ! पापाचार निवारी,
भव संतप्त भविक के भव में तुम हो संकटहारी।
हे गुरु ऐसा मंत्र हमें दो शीतलता पा जाऊँ,
यही आश ले चन्दन लाया तेरे चरण चढ़ाऊँ।।
करो मम भव का ताप विनाश-हृदय में शुभ गुण का हो वास
चरण में अरज हमारी है – अष्ट दरब से.................

ॐ ह्रूं प. पू. आचार्य 108 श्री विराग सागर यतिवरेभ्यः संसारताप विनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा.

अक्षत

हे गुरु ! तेरे चरणों की शुभ भक्ति तारणहारी,
रत्नत्रय की नौका भव से पार उतारनहारी।
अक्षत लेकर द्वय चरणों में आया पार लगाओ,
मुझको भी अक्षत जैसा ही निर्मल-धवल बनाओ।।
हमें दो रत्नत्रय का दान – मिले अक्षय पद का वरदान
यही गुणमय फुलवारी है अष्ट दरब ....

ॐ ह्रूं प. पू. आचार्य 108 श्री विरागसागर यतिवरेभ्यो अक्षय पद प्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा

पुष्प

आत्मशक्ति से तुमने गुरुवर ! सारा काम मिटाया,
निज में रमण किया निजबल से अद्भुत सुंदर काया।
हृदय पुष्प ले अर्पित करता, मेरे वेद मिटाओ,
कमलादिक शुभ फूल चढ़ाऊँ मंगल मुझे बनाओ।।
करो विध्वंस काम के वाण-खिलें मुझमें चेतनमय प्राण
तभी चेतन उजियारी है – अष्ट दरब से ....

ॐ ह्रूं प. पू. आचार्य 108 श्री विरागसागर यतिवरेभ्यः कामवाण विध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा

नैवेद्य

अल्पाहारी उपवासी तुम शक्ति समां रस त्यागी,
देख आपको भूख प्यास भी दूर हमारी भागी।
क्षुधा मिटाने षट् रस व्यंजन चरणों में ले आया,
तुमसी शक्ति पाने गुरुवर ! अर्पित करके गाया।।
मिटाओ क्षुधा-तृषा का रोग-तभी मिट पायेंगे भव-भोग
आपमें शक्ति सारी है – अष्टदरब से................

ॐ ह्रूं प. पू. आचार्य 108 श्री विरागसागर यतिवरेभ्यः क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा

दीप

सम्यग्ज्ञान ज्योति से गुरुवर ! तुमने दीप जलाया,
तत्त्व-द्रव्य का सार जानकर इस जग को प्रकटाया।
हे गुरु ! तुम हो ज्योति दिवाकर किरणें पाने आऊँ,
दीप जलाकर हृदय ज्योतिमय करूँ, भावना भाऊँ।।
करो मोहांधकार सब नाश-तुम्हीं से गुरुवर मेरी आश
ज्ञान तेरा उपकारी है – अष्टदरब से...................

ॐ ह्रूं प. पू. आचार्य 108 श्री विरागसागर यतिवरेभ्यो मोहांधकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा

धूप

अष्टकमल पर ध्यान लगाकर आठों कर्म मिटाते,
ध्यान अग्नि से बैठ ध्यान में सिद्धों सा सुख पाते।
धूप दशांग चरण में लाया मैं भी कर्म खपाऊँ,
सिद्ध रूप का ध्यान लगाने रज चरणों की पाऊँ।।
मिटाओ गुरुवर आठो कर्म – हृदय में ऐसा दो गुरु मर्म
आपकी महिमा न्यारी है – अष्टदरब से..............

ॐ ह्रूं प. पू. आचार्य 108 श्री विरागसागर यतिवरेभ्यो अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा

फल

मोक्ष तुम्हारी मंजिल गुरुवर सिद्धलोक ही घर है,
सिद्धों में गुरु नाम तुम्हारा होगा अजर-अमर है।
उत्तम फल मैं चरण चढ़ाऊँ मोक्ष महल फल देना,
भटक न जायें हम भव में गुरु अपनी शरणा लेना।।
हमें शिवफल का मिले प्रसाद - तभी हो हृदय बहुत दिलशाद
आपसे आश हमारी है - अष्टदरब से..............

*ॐ ह्रूं प.पू. आचार्य 108 श्री विरागसागर यतिवरेभ्यो
मोक्षफल प्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा*

अर्घ

नय-प्रमाण और तत्त्व-द्रव्य का सार आपने जाना,
ज्ञान दिवाकर ओजस्वी गुरु जिनवर जैसा बाना।
समता रस को पाने वाले तीर्थंकर लघुनंदन,
अष्ट दरबमय अर्घ समर्पित चरणों में हो वंदन।।
हो मम अनर्घ पद का धाम - करूँ मैं निज घर में विश्राम
विनती यही हमारी है - अष्टदरब से ....

*ॐ ह्रूं प.पू. आचार्य 108 श्री विरागसागर यतिवरेभ्यो
अनर्घ पद प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा*

जयमाल

विद्या वारिधि ज्ञान दिवाकर, हे विराग सागर गुण गागर।
पंचम युग के तीर्थ तुम्हीं हो, रत्नों के हो तुम ही सागर।।
वीतरागता तुमको भाई, तुमने मंजिल स्वयं दिखाई।
रत्नत्रय को हृदय समाकर, सम्यक् बोधि तुम्हीं ने पाई।
विमल मनस्वी त्यागी होकर, पाक गुणों के पागी होकर।।
निज स्वरूप का अनुभव करके गुण पाये अनुरागी होकर।
परम दिगम्बर रूप निखारा, निर्विकार निर्भय अति प्यारा।
नय-प्रमाण की जिसमें धारा, अति प्रशांत अति सुन्दर न्यारा।।
कठिन परीषह हँसकर सहते, अपने से अपने में रहते।
स्व- पर भेद विज्ञान प्रकाशी, मौन रहें तन से सब कहते।।
तीर्थंकर के तुम लघुनंदन, करते दूर सभी आक्रंदन।
कलियुग के भगवान हो गुरुवर, तेरा हो शत्-शत् अभिनन्दन।।
शिष्यों को तुम देते ज्ञान - जन-जन का करते कल्याण।
ऐसे गुरु ''विराग सागर'' को करता, शत शत बार प्रणाम।।

दोहा
गुरु चरणों की वंदना, जग में तीर्थ महान।
मिल जाये आशीष तो, सब मिलते वरदान।।

*ॐ ह्रूं प.पू. आचार्य 108 श्री विरागसागर यतिवरेभ्यो
जयमालाये महार्घ्यं निर्वपामीमि स्वाहा*

गुणानुरागी बन गुरो, गुण गाऊँ गुरुदेव ।
कर से दो आशीष मम, नमूँ करूँ नित सेव ॥
अहंकार तज दूँ सभी, गुण विराग लूँ साथ ।
हे विरागसागर गुरो, निजकर लो मम हाथ ॥

इत्याशीर्वाद पुष्पांजलिं क्षिपामि

परम पूज्य दिगम्बराचार्य 108 श्री विरागसागर जी की पूजा

/ / / / / / / / / / / / / / / / /

रचयिता :- आचार्य विनम्र सागर

\ \ \ \ \ \ \ \ \ \ \ \ \ \ \ \ \ \

धरती तेरे पद को पाकर बिखरा देती है चंदन,
सारा विश्व सदा ही करता तेरा नित नत अभिनन्दन ।
आओ गुरुवर मेरे उर में, दूर करो मम आक्रंदन,
ऋषिवर सूरि विराग सिंधु को मेरा बारम्बार नमन् ।।

**ॐ ह्रूं प. पूज्य 108 आचार्य श्री विरागसागर यतिवर! अत्र
अवतर अवतर संवौषट् आह्वानम्। अत्र-तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।
अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणम्।**

जल

निर्मल क्षीरोदधि का जल ले, चरण करूँ तेरे वंदन,
तेरे जैसा हो मन मेरा, इसीलिए करता अर्चन ।
तुम हो विमल सलिल के दाता दूर करो मम आतापन,
गुरुवर विराग सागर के पद, मेरा हो ये अर्पित मन ।।

**ॐ ह्रूं प. पूज्य 108 आचार्य श्री विरागसागर यतिवरेभ्यो
जन्म-जरा-मृत्यु विनाशाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।**

चन्दन

अघ के ताप हमारे ऊपर कर्म के कारण छाय रहे,
तुम्हीं सहारे ताप निवारे भवि चरनन में आय रहे ।
चंदन शीतल तुम पद धरता मन में शीतलता देना,
शरण चरण की हमको देकर भव के ताप मिटा देना ।।

**ॐ ह्रूं प. पूज्य 108 आचार्य श्री विरागसागर यतिवरेभ्यः
संसार ताप विनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।**

अक्षत

पाप करम को करके मैंने खुद संसार बढ़ाया था,
हुए असाता, दुख इस भव के सहन नहीं कर पाया था ।
उत्तम तंदुल लाया हूँ मैं देना रत्नत्रय मय धन,
गुरुवर के पद अक्षत धारूँ मन वच काय सदा अर्पन् ।।

**ॐ ह्रूं प. पूज्य 108 आचार्य श्री विरागसागर यतिवरेभ्यो
अक्षय पद प्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।**

पुष्प

देव मनुष्य पशु सब प्राणी, कामदेव से हार गये,
हे गुरुवर तुम महाशक्तिमय कामदेव तुम दास हुए ।
केशर पुष्प चढाऊँ चरणों, ब्रह्मचर्य कर देना दान,
भक्ति हृदय से करता तेरी, जग में तेरा नाम महान् ।।

**ॐ ह्रूं प. पूज्य 108 आचार्य श्री विरागसागर यतिवरेभ्यः
कामवाण विध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।**

नैवेद्य

तुम हो गुरुवर शक्ति प्रदाता रस परित्याग उचित धारी,
अल्पाहारी क्षुधा विनाशक तेरी है शक्ति सारी ।
घेवर-फैनी-लाडू-गोजा थाल भरे मैं लाया हूँ,
अपने तन की क्षुधा नशाने तुम्हें चढ़ाने आया हूँ ।।

ॐ ह्रूं प. पूज्य 108 आचार्य श्री विरागसागर यतिवरेभ्य:
क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

दीप

तीन लोक के द्रव्य-तत्त्व को उद्यम से तुमसे जाना,
अनुभव करके ज्ञान ज्योति से दृढ़ होकर उसको माना ।
ज्योति दिवाकर, ज्ञान ज्योति की किरणें पाने आया हूँ,
द्रव्य प्रकाशक दीप जलाकर तुम चरणों में लाया हूँ।।

ॐ ह्रूं प. पूज्य 108 आचार्य श्री विरागसागर यतिवरेभ्यो
मोहांधकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा ।

धूप

कृष्णानगर - कर्पूर गंध से धूप बनाकर ले आया,
इसे अनल से खेने से मिट जाती है भव में काया ।
कर्म नशाने गुण को पाने धूप चरण में लाया हूँ,
शक्ति दो हमको हे गुरुवर! शरणा पाने आया हूँ ।।

ॐ ह्रूं प. पूज्य 108 आचार्य श्री विरागसागर यतिवरेभ्यो
अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा ।

फल

काजू-किसमिस-दाख-छुहारे उत्तम फल जो अक्ष लगे,
चरणों में करता मैं अर्पित मुक्ति फल की ज्योति जगे ।
मोक्ष महल के दाता गुरुवर, मोक्ष महल को देना आप,
भव-भव के सब रोग दूर हों मिट जाए मेरा संताप ।।

ॐ ह्रूं प. पूज्य 108 आचार्य श्री विरागसागर यतिवरेभ्यो
मोक्षफल प्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा ।

अर्घ

विद्यावारिधि ज्ञान दिवाकर, ओजस्वी मम् गुरु महान्,
महा तपस्वी पंचमयुग के हो सर्वज्ञ करूँ गुणगान ।
आठ द्रव्य से आठ गुणों को तुमसे पाने आया हूँ,
करूँ समर्पण उर चरणों में अर्घ चढाने आया हूँ ।।

ॐ ह्रूं प. पूज्य 108 आचार्य श्री विरागसागर यतिवरेभ्यो
अनर्घ पद प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

जयमाल

दोहा

ज्ञान ध्यान तप लीन जो, शिवपथ पंथी देव ।
शिवपथ पाने मैं यहाँ, करता गुणगण सेव ।। 1 ।।
वीतराग जिनके सुमन, शिक्षा दीक्षा देत ।
भवि आ जावे जो दुखी, शरण उसे तुम लेत ।। 2 ।।

अल्प अवस्था में ही तुमने क्षुल्लक पद अपनाया था,
कठिन साधना करके तुमने, दृढ़ चारित्र सजाया था ।
गुरु सन्मति के चरण कमल में उचित ज्ञान तुम पाया था,
चार वर्ष रहकर फिर तुमने मुनिपद भाव सजाया था ।। 3 ।।

विमल गुरु से विमल मनस्वी होकर तुम निर्ग्रन्थ हुए,
पाप करम भी तुमको पाकर शुभ कर्मों में मग्न हुए ।
सम्यक् दर्शन-ज्ञान-चरित ये तीनों तुममें लहराते,
रत्नत्रय को देते हो तुम, भविजन जो शरणा आते ।। 4 ।।

दश धर्मों को हृदय सजाकर, चेतनता धन पाया है,
गुप्ती तप आवश्यक धारक अनुभव की ये छाया है ।
महामनस्वी ज्ञान दिवाकर तत्त्वों का नित करें प्रकाश,
हे गुरुवर ! दो शरण चरण की यह ही एक हमारी आश ।। 5 ।।

मेरे भगवन् आश यही है तुमसे ही यह बात कही,
यह जाना है हमने जग में तेरी शरण हमेश सही ।
तुमको गुरुवर अपने उर में पुण्य कमाने लाता हूँ,
तुम हो ईश्वर के सम दाता, चिरजीवित हो, भाता हूँ ।। 6 ।।

वंदन करता तुमसा बनने तुमको हृदय सजाता हूँ,
देना शरणा, हम बच्चों को शीश, ''विनम्र'' झुकाता हूँ ।।

चेतनता खिलती रहे, जिनवाणी के लाल ।
कोटि माह का वर्ष हो, जियो हजारों साल।।

ॐ ह्रूं प. पूज्य 108 आचार्य श्री विरागसागर यतिवरेभ्यो
जलमालाये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

गुरू चरण उर हों सदा, लीन रहूँ गुण गान ।
गुण पाने बन भक्त मैं, करूँ "विनम्र" प्रणाम ।।

हे गुरुवर ! कुछ चाह ना, देना नित आशीष ।
चरण 'विनम्र' रहूँ सदा, विनत झुकाऊँ शीश ।।

।। इत्याशीर्वाद पुष्पांजलिं क्षिपामि ।।

Life does not begin
without a preceptor

।।श्री विरागसागराय नमः।।

प.पूज्य आचार्य श्री विराग सागर जी महाराज की पूजन

रचयिता - मुनि विनम्रसागर

पाद पक्षालन

.क्षीरोदधि के निर्मल जल से गुरु के चरण धुलाएँगे,
चरणों की रज मस्तक रख लें पाप सभी मिट जायेंगे।
गुरु चरणों की रज है चंदन खुद महके-महकाती है
वीतरागमय धर्म प्रकट कर शिवसुख मार्ग दिखाती है।।

गुरु चरणोदक है परम, रोग मिटाता नाम।
उसको उर से वंद्यकर, निश-दिन करूँ प्रणाम।।

स्थापना

जहाँ पर पड़ जाते गुरु पाँव - वही पावन होता घर गाँव
गुरु की महिमा न्यारी है...............................
राग-द्वेष से दूर गुरु की चर्या प्यारी है
चरण में वंदन है चरण रज चंदन है

ॐ ह्रूं प.पू. आचार्य 108 श्री विरागसागर ! अत्र अवतर-2 संवौषट् आह्वानम्
ॐ ह्रूं प.पू. आचार्य 108 श्री विरागसागर ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्
ॐ ह्रूं प.पू. आचार्य 108 श्री विरागसागर ! अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधीकरणम्

जल

प्रासुक गंगाजल ले आया, निर्मल मन का भाव बनाया।
पावन गुरु के चरण चढ़ाया, पूजा कर ये मन हर्षाया।।

ॐ ह्रूं प.पू. आचार्य 108 श्री विरागसागर यतिवरेभ्यो जन्म-जरा-मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा

चन्दन

सम्यक् पाकर ज्ञान बढ़ाया, भवभव का संताप मिटाया।
चंदन अर्पित करूँ चरण में, गुरुवर देना सम्यक् छाया।।

ॐ ह्रूं प.पू. आचार्य 108 श्रीविरागसागर यतिवरेभ्यः संसारताप विनाशनाय चंदन निर्वपामीति स्वाहा.

अक्षत

रत्नत्रय गुण को पा जाऊँ, ऐसे हमने भाव बनाए।
अक्षय पद पाने को भगवन्, अक्षत चरणों तुम्हें चढ़ाये।।

ॐ ह्रूं प.पू. आचार्य 108 श्री विरागसागर यतिवरेभ्यो अक्षय पद प्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा

पुष्प

होने को निर्वेद हे गुरुवर, मंगलमय गुण हमने गाये ।
त्रय वेदों को नष्ट किया है, मंगलकारी भाव बनाये।।

ॐ ह्रूं प.पू. आचार्य 108 श्री विरागसागर यतिवरेभ्यः कामवाण विध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा

नैवेद्य

अल्पाहारी हो उपवासी, राग-द्वेष के भाव विनाशी।
चरणों में नैवेद्य-समर्पित, तुम हो गुरुवर शक्ति प्रकाशी।।

ॐ ह्रूं प.पू. आचार्य 108 श्री विराग सागर यतिवरेभ्यः क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्व. स्वाहा

दीप

ज्योतिर्मय उर दीप जलाया, सारे तम को दूर भगाया।
कंचनमय मैं दीपक लाया, ज्योतिर्मय हो मेरी काया।।

ॐ ह्रूं प.पू. आचार्य 108 श्री विरागसागर यतिवरेभ्यो मोहांधकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा

धूप

सिद्ध प्रभु का ध्यान लगाते, अपने आठों कर्म मिटाते।
धूप चढ़ाकर कर्म नशाऊँ, गुरुवर तुमको शीश झुकाते।।

ॐ ह्रूं प.पू. आचार्य 108 श्री विरागसागर यतिवरेभ्यो अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा

फल

सर्वराग को तजने वाले, मोक्ष महल को भजने वाले।
उत्तम फल भर थाल चढ़ाऊँ, शिव सुख प्राप्त कराने वाले।।

ॐ ह्रूं प.पू. आचार्य 108 श्री विरागसागर यतिवरेभ्यो मोक्षफल प्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा

अर्घ

अष्ट दरब से अर्घ बनाऊँ, मंगलमय तेरे गुण गाऊँ,
अष्ट करम को नाश करूँ मैं, आठों गुण हे गुरुवर! पाऊँ।
भव में भव का पास मिटाऊँ, अष्टम् वसुधा पाने ध्याऊँ,
अर्घ समर्पित हो चरणों में, निज में निज सा रूप बनाऊँ।।

ॐ ह्रूं प.पू. आचार्य 108 श्री विरागसागर यतिवरेभ्यो अनर्घ पद प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा

जयमाल

दोहा

ज्ञान- ध्यान - तप में निरत, वीतरागमय ज्ञान।
वाणी तत्त्व प्रकाशिनी, उन गुरु के गुणगान।।
मूलगुणों को पालते, स्व-पर करें कल्याण।
उन गुरुवर का मैं यहाँ, करूँ स्वच्छ यशगान।।

दिव्यरत्न के धारी गुरुवर दर्शन-ज्ञान-चरित्र विमल।
राग-द्वेष से दूर रहें नित जिनकी चर्या है निर्मल।
वीतरागमय भाव बनाते पाना जिनको मोक्ष-महल।
जग में रहते जग से न्यारे जैसे जल से भिन्न कमल।।1।।
तत्त्व चिन्त्यकर मंथन करते अनुभव में पा जाते सार,
भव्यों को भव पार कराते होने वाले भव से पार।
भव में सार - असार जानकर पाया सार तजा बेकार,
ऐसे विश्वजयी गुरुवर को करूँ नमन्! मैं लाखों बार।।2।।

पाँचों इन्द्रिय दास बनाईं मन आतम का सहचारी,
सत्य-अहिंसा-अपरिग्रह में गुरुवर प्रतिपल आचारी।
पिछी-कमण्डल-शास्त्र उपकरण से अपना उपचार करें,
जीवों की नित रक्षा करके जीवों का उपकार करें।।3।।

हित उपदेशी शिवपथ पंथी करते स्व-पर भेद विज्ञान,
मोक्षमार्ग का रूप दिखाकर निज-पर का करते कल्याण।
ज्ञान-दान भविजन को देकर धर्म ध्वजा फहराते हैं,
मोह हटाने की प्राणी को सुन्दर कला सिखाते हैं।।4।।

जिनागम का सार जानकर हंस समां जग में रहते,
तारण-तरण तपस्वी गुरुवर पुण्यकोश के संग बहते।
ज्ञान दिवाकर तीर्थंकर के हे गुरु आप हो लघुनंदन,
लाखों बार प्रणाम है तुमको करूँ हृदय से अभिनन्दन।।5।।

गुरु चरणों को पूजकर, हृदय धरूँ गुरु नाम।
गुरु ''विराग'' के द्वय चरण, करूँ ''विनम्र'' प्रणाम।।

ॐ ह्रूं प.पू. आचार्य 108 श्री विरागसागर यतिवरेभ्यो
जयमालाए अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा

''इत्याशीर्वाद पुष्पांजलिं क्षिपामि''

।।श्री विरागसागराय नमः।।

प.पूज्य आचार्य श्री विराग सागर जी महाराज की पूजन

रचयिता - मुनि विनम्रसागर

''नही रंच आरंभ परिग्रह, ज्ञान ध्यान में लीन रहें,
भव्यों को सत्मार्ग प्रदाता, हित मित वचन सदैव कहें।
ऐसे गुरुवर ''विराग सागर'', चरणों करूँ ''विनम्र'' नमन,
आह्वानन् स्थापन करके, रहूँ सन्निकट मैं प्रतिदिन।।

ॐ ह्रूं प.पू. आचार्य 108 श्री विरागसागर ! अत्र अवतर-2 संवौषट् आह्वानम्
ॐ ह्रूं प.पू. आचार्य 108 श्री विरागसागर ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्
ॐ ह्रूं प.पू. आचार्य 108 श्री विरागसागर !अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधीकरणम्

जल

मन को जिनने जल सम करके, बना लिया उर उज्ज्वल धार,
वाणी कर देती उज्ज्वल मन, देती है जीवन का सार।
क्षीरोदधि के जल को लाकर पूजूँ करने प्रासुक मन,
चरण समर्पित करता हूँ मैं सौ - सौ बार सदैव नमन्।।

ॐ ह्रूं प.पू. आचार्य 108 श्री विरागसागर यतिवरेभ्यो
जन्म-जरा-मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा

चन्दन

शीतलतामय वचन कहें नित भव का रोग करें सब दूर,
तन संताप मिटावन हारे महिमा जग में अति ही भूर।
मलयागिरि चंदन को लेकर चरणों करूँ सदा अर्पन,
भव के तुम संताप विनाशो तुमको शत - शत बार नमन्।।

ॐ ह्रूं प.पू. आचार्य 108 श्री विरागसागर यतिवरेभ्यः
संसारताप विनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा.

अक्षत

शुभ रत्नत्रय धारा निज में, निज में निज को लीन किया,
देव-शास्त्र-गुरु चरणों जिनने अपने को अति दीन किया।
भक्ति करूँ तेरी मैं उर से, पाने तीन गुणों का धाम,
गुरुवर के युग चरण कमल में मेरा बारम्बार प्रणाम।।

ॐ ह्रूं प.पू. आचार्य 108 श्री विरागसागर यतिवरेभ्यो
अक्षय पद प्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा

पुष्प

सुर-नर-पशु सब काम बाण से, हार गए तुम ज्ञान सुधीर,
ब्रह्मचर्य व्रत धार लिया है, तुम ही जग में हो महावीर।
कुंद कमल से पुष्प चढ़ाकर, काम वाण का करूँ दमन,
गुरुवर विरागसागर पद में, निज धन पाऊँ करूँ नमन्।।

ॐ ह्रूं प.पू. आचार्य 108 श्री विरागसागर यतिवरेभ्यः
कामवाण विध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा

नैवेद्य

महा भयानक मद बतलाया, उसको तुमने जीत लिया,
एक बार आहारी बनकर निज में अमृतपान किया।
चरणों में नैवेद्य समर्पण करके मैं उपवास करूँ,
क्षुधा नशाने तेरे गुण का प्रतिदिन मैं गुणगान करूँ।।

ॐ ह्रूं प.पू. आचार्य 108 श्री विराग सागर यतिवरेभ्यः
क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा

दीप

उत्तम पुरुषारथ को करके, मोह महातम जीत रहे,
ज्ञान ज्योति को परकाशित कर, जिनवाणी के वचन कहे।
दीप जलाकर कंचन जैसा, चरणों में करता अर्पन,
मोह मिटाओ मेरा गुरुवर, मेरा बारम्बर नमन्।।

ॐ ह्रूं प.पू. आचार्य 108 श्री विरागसागर यतिवरेभ्यो
मोहांधकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा

धूप

आठ करम को ध्यान अग्नि में, दहन निरत जो करते हैं,
मुक्ति महल सा अन्तर्मन में, आलोकित सुख वरते हैं।
अष्ट करम के नाश करन को धूप चढ़ाऊँ गुरू चरन,
गुरुवर विरागसागर के पद, मेरा हो चैतन्य सुमन।।

ॐ ह्रूं प.पू. आचार्य 108 श्री विरागसागर यतिवरेभ्यो
अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा

फल

मोक्ष महल को पाने गुरुवर, तुमने त्याग किया सब लोभ,
राग द्वेष सब दूर रहें नित, कभी न आता मन में क्षोभ।
तेरा अविनश्वर सुख जग में तेरे चरणों आया हूँ,
मोक्ष महल को तुमसे पाने उत्तम फल को लाया हूँ।।

ॐ ह्रूं प. पू. आचार्य 108 श्री विरागसागर यतिवरेभ्यो
मोक्षफल प्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा

अर्घ

जल चन्दन अक्षत सुमनों से औ नैवेद्य दीप शुभ लाय,
धूप फलों को एकमेक कर तेरे चरणों अरघ बनाय।
उत्तम पद मुझको मिल जाए ऐसा भाव करूँ मैं आय,
तेरे चरणों अर्घ समर्पित करके उत्तम अर्घ चढ़ाय।।

ॐ ह्रूं प. पू. आचार्य 108 विरागसागर यतिवरेभ्यो
अनर्घ पद प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा

जयमाल

दोहा

ज्ञान ध्यान तप लीन नित, शारद माँ के लाल।
कोटि दिनों का वर्ष हो, जिओ हजारों साल।।
भव्यों को हैं रवि समां, तम का करें विनाश।
गाऊँ गुण जयमाल का, हो चैतन्य विकास।।

ग्राम पथरिया जन्मे थे जो श्यामा माँ का गर्भ लिया।
कपूर चन्द का भाग्य जगाया, सर्व नगर को धन्य किया।।
अल्प आयु में छहढाला पढ़, हुए विरक्त छोड़ घर बार।
क्षुल्लक पद आसीन हो गये, नाम पूर्ण सागर आधार।।

तीन वरष क्षुल्लक पद रहकर, मुनिपद लिया स्वयं में धार।
हुए दिगम्बर लिए महाव्रत, पाया निज में निज का सार।।
तत्त्व ज्ञान में लीन रहें नित, महिमा जिनकी अगम अपार।
गुरुवर विराग सागर बन्दू नमहूँ उर से बारम्बार।।
वाणी से झरता है आगम, न्यायमयी भाषा शुभज्ञान।
जो अध्यात्म ध्यान रम करके, भव्यों को दें सम्यकदान।।
मोह विनाशक ज्ञान विकासक मेरा नमन् करो स्वीकार।
ज्ञान दान हम सबको देकर, मुझे ले चलो भव के पार।।
पाँच समिति छः आवश्यक औ पाँच महाव्रत की है शान।
देव-शास्त्र-गुरु हृदय सम्हारें करते हैं उन पर बहुमान।।
आराधन, तप, दशविधि धर्म दृढ़ता धारण करें सघन।
भव्यजनों को है सुखदायी, करते भव्य सदैव नमन्।।
राग द्वेष नहिं समतावाणी, अन्तर्जल्प करें विश्राम।
आतम में नित लीन रहें गुरु, आलोकित करते शिवधाम।।
दु:खीजनों को धर्मामृत दे प्रतिदिन देते सुखमयदान।
भव्यजनों को पालनहारे, गुरुवर को शत बार प्रणाम।।
जिनवाणी का मंथन करके, तत्त्व सारमय करें बखान।
समयसार का रूप दिखाते, जैसा जिनवाणी गुणगान।।
गुरु ''विमल'' से दीक्षा पाकर करते हैं जो पाप शमन्।
गुरुवर ''विराग'' सागर जी को शत-शत बार ''विनम्र'' नमन्।।
''सम्यक् चारित के धनी, सम्यक् दर्शन ज्ञान।
निज में निज रमते गुरो, चेतनता के धाम।।

ॐ ह्रूं प. पू. आचार्य 108 श्री विरागसागर यतिवरेभ्यो
जयमालाए अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ''इत्याशीर्वाद पुष्पांजलिं क्षिपामि''

परम पूज्य आचार्य श्री विरागसागर जी महाराज की पूजन

आर्यिका विमल श्री

तर्ज - ओ जगत के शांतिदाता.....

हैं विरागी - वीतरागी - गुरु हमारे - जय हो तेरी ऽऽऽ

ज्ञान-दृग-चारित्र के गुरुवर यहाँ आदर्श हैं।
समिति व्रत इन्द्रिय विजय में आप ही उत्कृष्ट हैं।
थापकर उर में बसाऊँ - गुरु हमारे - जय हो तेरी -ऽऽ

ॐ ह्रूं प. पू. आचार्य श्री विरागसागर यतिवर अत्र-अवतर अवतर संवौषट् आह्वानं, अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठ: ठ: स्थापनं, अत्र मम सन्निहितो भव - भव वषट् सन्निधिकरणं।

(पुष्पांजलिं क्षिपामि)

आपने निज तत्व पाकर मन किया निर्मल यहाँ
चित्त निर्मल हो हमारा भावना मेरी यहाँ
जल चढाऊँ मैं विनिर्मल-गुरु हमारे जय हो तेरी-ऽऽ

ॐ ह्रूं प. पू. आचार्य श्री विरागसागर यतिवरेभ्यो जन्म-जरा-मृत्यु विनाशनाय जलं निर्व. स्वाहा।

रुल रहे प्राणी सभी संसार के मझधार में
देशना शुभ आपकी पहुँचाएगी शिवमार्ग में
मलयागिरि चंदन चढ़ाऊँ-गुरु हमारे जय हो तेरी-ऽऽ

ॐ ह्रूं प. पू. आचार्य श्री विरागसागर यतिवरेभ्य: संसार ताप विनाशनाय चंदनं निर्व. स्वाहा।

दिव्य तीनों रत्न पाकर क्षय किया भव आपने
भक्ति हम करते यथारथ जैसी की है आपने
स्वच्छ अक्षत हैं समर्पित-गुरु हमारे जय हो तेरी-ऽऽ

ॐ ह्रूं प. पू. आचार्य श्री विरागसागर यतिवरेभ्यो अक्षय पद प्राप्तये अक्षतं निर्व. स्वाहा।

तीन वेदों को मिटाया आपने निजशक्ति से
वीतरागी रूप तुमसा प्राप्त हो गुण भक्ति से
पुष्प हैं चरणों में अर्पित-गुरु हमारे जय हो तेरी-ऽऽ

ॐ ह्रूं प. पू. आचार्य श्री विरागसागर यतिवरेभ्य: कामवाण विध्वंसनाय पुष्पं निर्व. स्वाहा।

जीतकर आसक्ति रस में क्षुधा कर डाली शमन्
शक्ति ऐसी दो हे गुरुवर! क्षुधा हम कर दें शमन्
लाडु चरणों में चढ़ाऊँ-गुरु हमारे जय हो तेरी-ऽऽ

ॐ ह्रूं प. पू. आचार्य श्री विरागसागर यतिवरेभ्य: क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्व. स्वाहा।

करके उद्यम आपने दीपक जलाया ज्ञान का
आपकी उस रौशनी में वर लूँ पथ कल्याण का
दीप ज्योतिर्मय समर्पित-गुरु हमारे जय हो तेरी-ऽऽ

ॐ ह्रूं प. पू. आचार्य श्री विरागसागर यतिवरेभ्यो मोहांधकार विनाशनाय दीपं निर्व. स्वाहा ।

अष्टकर्मों को मिटाने ध्यान आलम्बन लिया
निजको निज में ही रमाया आठ गुणमय रस पिया
धूप चरणों में चढ़ाऊँ-गुरु हमारे जय हो तेरी-ऽऽ

ॐ ह्रूं प. पू. आचार्य श्री विरागसागर यतिवरेभ्यो अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्व. स्वाहा ।

ज्ञान सम्यक प्राप्त करके मोक्षफल को पा रहे
श्रेष्ठफल लाया हूँ चरणों आपके गुण गा रहे
फल चढ़ाकर पूजता मैं-गुरु हमारे जय हो तेरी-ऽऽ

ॐ ह्रूं प. पू. आचार्य श्री विरागसागर यतिवरेभ्यो मोक्षफल प्राप्तये फलं निर्व. स्वाहा ।

अष्ट द्रव्यों को मिलाकर अर्घ लाया थाल में
नंतगुण का लाभ होवे भाव लाया भाल में
अर्घ हो चरणों में अर्पित-गुरु हमारे जय हो तेरी-ऽऽ

ॐ ह्रूं प. पू. आचार्य श्री विरागसागर यतिवरेभ्यो अनर्घ पद प्राप्तये अर्घ्यं निर्व. स्वाहा ।

जयमाल

दोहा-

वीतरागमय रूप है जिनका हृदय विशाल ।
ऐसे गुरु विराग की गाऊँ मैं जयमाल ।। 1 ।।

चौपाई-

गंगा धर्म बहाते आये, दीपक सभी जलाते आये ।
सच्चा मार्ग बताया सबको, सबके हृदय लुभाते आये ।। 2 ।।

सबसे मैत्री भाव सजाते, गुण में मोद हमेशा लाते ।
समतामय जो रूप बनाते, ऐसे गुरु को शीश झुकाते ।। 3 ।।

जिनका उर अत्यन्त सरल है, वाणी मीठी परम विमल है ।
धर्म ध्वजा फहराते हरदम, भाव हमेशा ही निर्मल है ।। 4 ।।

कुंदकुंद के तुम लघुनंदन, सारा जग करता अभिनंदन ।
समयसारमय चर्या जिनकी, ऐसे गुरु को शत शत वंदन् ।। 5 ।।

पंच महाव्रत पालन करते, पाँच समिति को उर में धरते ।
षट् आवश्यक का आराधन, तीन गुप्ति का अनुभव करते ।।6 ।।

राग-द्वेष नहिं जिनके मन में, लीन रहें गुरु निज चेतन में ।
महिमा जिनकी अगम अतुल है, वीतरागता जिनके मन में ।।7 ।।

सँभल-सँभलकर चलने वाले, परीषहों को सहने वाले ।
भेदज्ञान की कला बताकर, शिवपथ पर जो चलने वाले ।।8 ।।

जिनमें तेरा-बीस न पंथ, रंचमात्र नहिं जिनमें ग्रंथ ।
वीतराग पथ के अनुयायी, गुरुवर हैं केवल निर्ग्रन्थ ।। 9 ।।

ज्ञान दिवाकर ! तुम्हें प्रणाम, शिवपथ गामी तुम्हें प्रणाम ।
हे अभिरामी ! तुम्हें प्रणाम, धर्मसिंधु हे ! तुम्हें प्रणाम ।। 10 ।।

ॐ ह्रूं प. पू. आचार्य श्री विरागसागर यतिवरेभ्यो जयमालाये अनर्घ पद प्राप्तये महार्घ्यं निर्व. स्वाहा ।

हे गुरुवर ! आशीष दो, शिवपथ दो वरदान ।
रत्नत्रय की नाव में, बैठूँ करूँ प्रणाम ।।

गुरु की भक्ति से मिले, ज्ञान ध्यान कल्याण ।
कर से दो आशीष मम, लाखों बार प्रणाम ।।

इत्याशीर्वाद (पुष्पांजलिं क्षिपामि)

।।श्री विरागसागराय नमः।।

प.पू.आचार्य श्री विनम्रसागर जी महाराज की पूजन

रचयिता -मुनि विज्ञ सागर

पाद पक्षालन

चौपाई

निर्मल जल से चरण धुलाऊँ, पावन मन से मैं गुण गाऊँ।
मस्तक पर रज चरण लगाऊँ, अपने सारे पाप मिटाऊँ।।

दोहा

गुरु चरणोदक वन्द्यकर, गाऊँ गुरु गुणगान।
गुरु विनम्र के द्वय चरण शत-शत बार प्रणाम।।

स्थापना

हे गुरु विनम्र सागर! चरणों अभिवंदन,
चरण कमल में अर्पित होकर करूँ नमन्।
भक्तिभाव से यहाँ करूँ मैं आह्वानम्,
हृदय विराजो करता हूँ मैं स्थापन।।

ॐह्रः प.पू. मुनि श्री विनम्रसागर ! अत्र अवतर-2 संवौषट् आह्वानम्
ॐह्रः प.पू. मुनि श्री विनम्रसागर ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्
ॐह्रः प.पू. मुनि श्री विनम्रसागर !अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधीकरणम्

जल

शुद्ध जल मैं क्षीरसागर का यहाँ लाया,
मन मेरा पावन हो मैं गुरु के चरण आया।
स्वच्छ मन निर्मल हो मेरा आपसा गुरुवर!
लो हमें अपनी शरण पावन मेरे गुरुवर!
जल चरणों में अर्पित करता हूँ भगवन्!
चरण कमल................

ॐ ह्रः प.पू. 108 श्री विनम्रसागर मुनिवरेभ्यो जन्म-जरा-मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा

चन्दन

ज्ञान सम्यक् के बिना भव ही भ्रमाए हैं,
आपने सन्मार्ग के रस्ते दिखाए हैं।
भव विनाशन के लिए चंदन चढ़ाता हूँ,
नाश हो संताप मेरे गीत गाता हूँ।
पावन चंदन करूँ समर्पित हे भगवन्!
चरण कमल................

ॐ ह्रः प.पू. 108 श्री विनम्रसागर मुनिवरेभ्यः संसारताप विनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा.

अक्षत

आप रत्नत्रय गुणों की खान हो गुरुवर!
आप ही जिनधर्म की शुभ शान हो गुरुवर!
दो हमें त्रयगुण तुम्हें अक्षत चढ़ाता हूँ।
पूज्य पावन भक्ति मैं उर में सजाता हूँ।
अक्षत स्वच्छ चरण में अर्पित हैं भगवन्!
चरण कमल................

ॐ ह्रः प.पू. 108 श्री विनम्रसागर मुनिवरेभ्यो अक्षय पद प्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा

पुष्प

हो गये तुम पार तीनों वेद से गुरुवर!
पा लिया निजसार तुमने आपमें गुरुवर!
आप में रमने की मुझमें शक्ति दो पावन।
पुष्पमय कोमल हमारा हो हृदय उपवन।।
पुष्प सुगन्धित हे गुरु! चरणों में अर्पण
चरण कमल................

ॐ ह्रः प.पू. 108 श्री विनम्रसागर मुनिवरेभ्यः कामवाण विध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा

नैवेद्य

हो खड़े आहार लेते अल्प निज कर में,
फिर भी तुम आसक्त होते हो नहीं पर में।
आपके चरणों यहाँ पकवान लाया हूँ,
नाश हो मेरी क्षुधा ये भाव लाया हूँ।
अर्पित है नैवेद्य चरण में हे भगवन्!
चरण कमल................

ॐ ह्रः प.पू. 108 श्री विनम्रसागर मुनिवरेभ्यः क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा

दीप

धर्म की ज्योति हृदय में खुद जलाई है,
रौशनी सम्यक्त्व की उर में समाई है।
ज्ञान की वह ज्योति पाने दीप लाया हूँ,
मोहतम को नाशने चरणों में आया हूँ।
ज्योतिर्मय दीपक चरणों में है अर्पण
चरण कमल................

ॐ ह्रः प.पू. 108 श्री विनम्रसागर मुनिवरेभ्यो अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा

धूप

अष्टकर्मों को मिटाने ध्यान करते हो,
ध्यान में रमकर नहीं तुम मान करते हो।
धूप चरणों में चढ़ाकर अष्टगुण ध्याऊँ,
अष्टकर्मों को मिटाकर सिद्ध पद पाऊँ।
धूप चढ़ाकर अष्ट करम का करूँ दहन
चरण कमल................

ॐ ह्रः प.पू. 108 श्री विनम्रसागर मुनिवरेभ्यो अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति. स्वाहा

फल

त्यागकर पर को निरंतर मोक्ष भाते हो,
जिन प्रभु गाथा यहाँ दिन रात गाते हो।
मोक्षफल पाने परम फल मैं चढ़ाता हूँ,
शीश अपना आपके चरणों झुकाता हूँ।
मोक्ष महल पाने को उत्तम फल अर्पण
चरण कमल................

ॐ ह्रः प.पू. 108 श्री विनम्रसागर मुनिवरेभ्यो मोक्षफल प्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा

अर्घ

फूल फल जल गंध अक्षत धूप चरु लाया।
दीप की उस रौशनी से अर्घ बनाया।
सर्व गुण पाने चढ़ाया आपको गुरुवर!
ज्ञान दर्शन नंत गुण का लाभ हो गुरुवर!
अष्टम् वसुधा पाने अर्घ तुम्हें अर्पण।
चरण कमल................

ॐ ह्रः प.पू. 108 श्री विनम्रसागर मुनिवरेभ्यो अनर्घ पद प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा

जयमाल

दोहा

समता आभूषण परम, वीतराग शुभ ध्यान।
गुरुवर परम पियूष हैं, गाऊँ मैं यशगान।
राग द्वेष करते नहीं, जिन - श्रुत करते ध्यान।
उन-गुरुवर के द्वय चरण, शत-शत बार प्रणाम।।

चौपाई

तत्त्वों का नित निश्चय करते नहीं मूढ़ता उर में धरते।
चिंतन मंथन अनुभव द्वारा, ज्ञान विशेष निरंतर वरते।।1।।
सामायिक में समता धारें, शुद्ध शब्द थुति में उच्चारें।
जिन आगम् का सार जानकर, भव्यों को जो भव से तारें।।2।।
भक्तामर का पाठ पढ़ाते उसके गूढ़ तत्त्व बतलाते।
पूजन के सम्राट कहाते, जन-जन को हैं बोध कराते।।3।।
समिति पाल करके जो चलते अपने मूलगुणों में ढलते ।
निज गुण में उत्साहित होकर, पाप करम को नित-प्रति दलते।।4।।
पाँचों इन्द्रिय दास तुम्हारी, मन गुरुवर का आज्ञाकारी
विजय पताका फहराते हो, हे गुरुवर तुम हो त्रिपुरारी।।5।।
केशलोंच निज हाथ करें जो, होकर खड़े अहार करें जो।
करते नहीं कभी स्नान, जीवन भर तक नग्न रहें जो।।6।।
पिछी कमण्डल है पहिचान, जिनको स्व-पर भेद विज्ञान।
निज-पर का उपकार करें नित, अजब निराली गुरु की शान।।7।।
तीर्थ वंदना मन से करते, प्रतिक्रमण-स्वाध्याय सँवरते।
कायोत्सर्ग करें सब तजके, ऐसे गुरु को वंदन करते।।8।।

परम अहिंसा धरम सजाया, सत्य धर्म अपरिग्रह भाया।
ब्रह्म-अचौर्य धर्म को पाकर, गुरु विनम्र का मन हर्षाया।।9।।
ज्ञान दिवाकर तुम्हें प्रणाम, हे गुणसागर तुम्हें प्रणाम।
शिवपथ पंथी तुम्हें प्रणाम, धर्म सिंधु गुरु तुम्हें प्रणाम।।10।।

ॐ ह्रः प.पू. 108 श्री विनम्रसागर मुनिवरेभ्यो
जयमालाये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा

दोहा

गुरु की भक्ति से मिले, सब कुछ ही वरदान।
शिवसुख मिलता है उसे, जो नित करे प्रणाम।।
श्री गुरुवर की आशिका लीजे शीश चढ़ाय।
भव - भव के पातक कटें दुःख दूर हो जाय।।

''इत्याशीर्वाद पुष्पांजलिं क्षिपामि''

तीन कम नौ करोड़ मुनिराजों का अर्घ

वीतरागमय लक्ष्य बनाया भाव सहित मुनि पद को धार,
लीन रहें निज आतम में नित छोड़ दिये संसार विचार।
मुनिवर तीन न्यून नव कोटि शिवपुरगामी कहे प्रधान,
अर्घ चढ़ाऊँ सब मुनियों को शत-शत बार ''विनम्र'' प्रणाम।।

ॐ ह्रीं: त्र्यून नव कोटि मुनिवरभ्यो अनर्घ पद प्राप्तये
अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा

क्षमा याचना

बिन जाने वा जानके, रही टूट जो कोय।
तुम प्रसाद तैं परम गुरु, सो सब पूरण होय।।
पूजन विधि जानूँ नहीं, नहिं जानूँ आह्वान।
और विसर्जन हूँ नहीं, क्षमा करो गुरुदान।।
मंत्रहीन धनहीन हूँ, क्रियाहीन गुरुदेव।
क्षमा करहुँ राखो हमें देहु चरण की सेव।।

(कायोत्सर्गं करोम्यहम)

गुरुवर तुम्हें प्रणाम

आशीष हाथ गुरु का जब से मिला है,
संतोष का कमल जीवन में खिला है।
निर्दाम ही मिल रही हमको सु-वस्तु,
मैं बार - बार करता गुरु को नमोऽस्तु।।

भटके हुए हैं गुरु हम नादान बच्चे,
सौभाग्य से मिल गये गुरुदेव सच्चे।
आशीष दो नित हमें कहकर तथास्तु,
है कोटि - कोटि गुरुवर ! तुमको नमोऽस्तु।।

आरती

ओ गुरुवर! हम सब उतारें तेरी आरती ।
ओ ऋषिवर! मिलकर उतारें तेरी आरती।।
परम दिगम्बर मुद्रा तेरी भव तारण हारी ।
धर्म दिवाकर तुम हो गुरुवर सबको सुखकारी ।।
ओ गुरुवर............
ज्ञान ज्योतिमय हितकर वाणी सबको कल्याणी ।
चरणों में आकर के तेरे तृप्त हुए प्राणी
ओ गुरुवर............
मोक्षमार्ग के नेता गुरुवर कष्ट हरो मेरे ।
शरण तुम्हारी आया हूँ मैं - दूर करो फेरे
ओ गुरुवर............
मंगलदायी मंगलमय हो - पावन परम तुम्हीं
हम सब गुरु पुजारी तेरे - भगवन मेरे तुम्हीं
ओ गुरुवर............
मोह विनाशी ज्ञान प्रकाशी संवर गुणधारी
महिमा वेद पुराणों तेरी समकित भण्डारी ।।
ओ गुरुवर............
राग द्वेष मद मोह न माया निज स्वरूप गागर
तुमकों नमन करोड़ों मेरा करुणा के सागर
ओ गुरुवर............
विश्व भ्रमण से थक कर गुरुवर चरण शरण आया
ज्योति पुंज के सन्मुख गुरुवर, आत्म ज्योति लाया।।

आरती

ॐ जय - जय अविकारी स्वामी जय - जय गुणधारी
गुरु विराग सुखकारी शाश्वत स्व बिहारी ।।
ॐ जय.............

धर्म रुप शिवनायक गुरुवर ज्ञान ज्योति धारी -2
सबको तत्त्व बताते - समकित भण्डारी ।।
ॐ जय.............

पंच महाव्रत पंच समिति को निज में आचारी -2
कष्ट विनाशक गुरुवर -2 सबको हितकारी
ॐ जय.............

स्वपर भेद विज्ञान कराते - निज पर उपकारी -2
राग-द्वेष निरवारी-2, भवि के दुःख हारी ।।
ॐ जय.............

मोक्ष महल की नाव बैठकर - संवर गुण धारी-2
महिमा तेरी न्यारी, रत्नत्रय धारी ।।
ॐ जय.............

मोह विनाशी ज्ञान प्रकाशी - गुण वत्सल धारी-2
आरती उन गुरुवर की मन से उच्चारी ।।
ॐ जय.............